

प्रभा

४४

केसेवक॥ हेरत बेर स्वांमीना॥ त्यागीये॥ ३॥ वेगे
जगोममनाथसाथसकलहोतछीना॥ नारण
दासकेसासपांण॥ दरसनकीदधीना॥ त्यागी
येकतारधीना॥ धारनभयोदीना॥ ४॥ पदः॥ ४
इतीश्रीसंपूर्णः॥ ॥ अथश्रीकागलपदलीप्यते
कुवेरक्रीपाकरोषोसार॥ तमनेभेगजुगआधा
र॥ जनकपुरमांजनमतमारो॥ सारसांनाछो
वासी॥ पावंनकीधुपरगण॥ नलीप्रेमजोत
प्रकाश॥ कुवेर॥ ५॥ पथंमज्ञानमननीआद्यन
हुती॥ नुताकांईआकारा॥ तारपेहेलुतेसुजुहुत
वीकवरावोवारा॥ कुवेर॥ ६॥ ईडपीडपरकाश
नुहुता॥ करताकपांहांथकीआव्या॥ तेवीसण
करजोवीसेके॥ तोमाहारेमंनभाव्या॥ कुवेर
३॥ सुखमथुलकारणमाहाकारण॥ परमका
रणतेजगवी॥ तेहेनोपरीउत्तरकरजोमुजते
संसेसरवेभगवी॥ कुवेर॥ ४॥ तमेंपावंनकीधा
लोकपरना॥ आपीनेउपदेश॥ दासगोकलचर
णसेवक॥ तेनाछोडोनेसंदेश॥ कुवेरक्रीपा॥ ५
॥ पदा॥ १॥ नीजज्ञानीगोकलसंमतमनेकुवेरक
रेपरमांण॥ तमारीवांणीमांआकृत॥ पामेअ
लपबुधहोयअत॥ टेक॥ १॥ पथंमज्ञानमननी

आद्यसुक्ष्म **॥** अवीगत्य मे अंकुरा **॥** जैसे वृक्ष बीज
 मेहता **॥** सोई भया सफुरारे **॥** नीज ज्ञां नी **॥** २ **॥** ई
 डपीड करता मेहता **॥** करता अकत हकारा **॥** जे
 से बीजी बाजी गर मे **॥** बेलत भया पसारारे **॥** नी
 ज्ञां नी **॥** ३ **॥** तमे कहते नुता आकारा **॥** तार पेहे
 लु सुहुतु **॥** नीज स्वरूप आद्य कैवल पद **॥** हुतु प
 ए लुतु सफरुतु **॥** नीज ज्ञां नी **॥** ४ **॥** सुक्ष्म युक्त का
 रण माहाकारण **॥** परम कारण जे को ही छे **॥** तो
 चरचा करीये तुम साथे **॥** तमें कृण कारण मेरी
 होछे **॥** नीज ज्ञां नी **॥** ५ **॥** जे कारण मेल स्यत मारी
 तेहे नी चरचा करीये **॥** तंम हंम आं स भागे अंतर
 गत्य **॥** एक थईने फरीये **॥** नीज ज्ञां नी **॥** ६ **॥** बील पा
 ड बीलां ने पाडे **॥** रत्न पाड तमे करीये **॥** गोकुल ज्ञां
 नवता सुएव **॥** सहनु कारज सरीये **॥** ७ **॥** नीज ज्ञां
 नी **॥** अवस्था सी के हंम उपासी **॥** तंम होसी हंम
 ज्ञां नी **॥** सत कुंवर वाघर के वाशी **॥** यो होचे नही मं
 न बां नी **॥** नीज ज्ञां नी **॥** ८ **॥** पदः **॥** २ **॥** छाल फेरः **॥**
 गोकुल ज्ञां नवंत तव ज्ञां नु **॥** तुम हो संत सुजान
 ज्ञां न के बडे ऊवेरी **॥** पुछु जे पर संत जंत मं नमां
 ही विचारी **॥** तेहे नो परी उत्तर करोरे **॥** अंतर उपजे
 भाव **॥** पंड पंड घाटे सबेरे **॥** कृण स्वरूपै सतंतर स्या

॥ कागल वागो कुंल ज्ञान ॥ १ ॥ अद्वैते आद्वैत पथं मकी हो कं
 मउपांतु ॥ सुलवता वो मरम भरम भागे हं मजां
॥ ४५ ॥ नु ॥ जे जे थी उत पंन भयुरे पंचत त्वगुं नती न मा
 या सही त संसे द हो तां रुह तं म आधी त ॥ गोकुल
 ज्ञान ॥ २ ॥ को हो प्रकृती नु सुल सुल संसे सब भा
 गी ॥ कृण गुण नो पेर कल ह्य पुष्टु ते आगे ॥ ईश्व
 र को हो के हे नै को हो रे सुहु नो करता सोई ॥ वं
 ह्य अ करता क्पां हं रहें ते ॥ सान वता वो मोई गोकु
 ल ॥ ३ ॥ सस भो म्य का भेद वेद वी स्या ते जां ऐ ॥ ते हे नो
 कहो मम अरथ ग्रंथ जं म सुरती बखाने ॥ मंत
 वांणी को हो क्पां हं लगे रे सस भो मम ही सोय
 अमी गोकुल अनुभव करो तो कुवेर कहे स
 त दोय ॥ गोकुल ज्ञान वंत त व जां नु ॥ ४ ॥ पद ॥
 ३ ॥ ईती श्री कागल पद संपूर्णः ॥ ॥ अथ पु
 बंध छंद पद श्री मत कूबेर स्वांमी कृत प्रारंभ ते
 यो जे नीज पंड जे पंचंड गती संत ॥ प्रथं म पीता
 सै न्याद वी द उत पां नी ॥ सीती ते ज प वं न प्र संग
 संग आं नी ॥ उ स ते ज कुमल हे ज गंध अव न्य चुर
 ल प वं न ॥ चतुर एवं न प्र ग ट ले वं न ॥ अषी ल स्वे
 अवी का स ॥ वा स छे व ट सुं न्य तं त ॥ गती संत ॥ १ ॥
 जीनु नीज कारण पुर स प्रकृती जुगल ताई अ